नये गीत

नये गीत
तीसरा पहर कहता है : मैं छाया के लिये प्यासा हूँ
चाँद कहता है : मुझे तारों की प्यास है।
बिल्लौर की तरह साफ झरना होंठ माँगता है
और हवा चाहती है आहें।

मैं प्यासा हूँ खुशबू और हँसी का
मैं प्यासा हूँ चन्द्रमाओं, कुमुदिनियों
और झुर्रीदार मुहब्बतों से मुक्त
गीतों का।

कल का एक ऐसा गीत
जो भविष्य के शान्त जलों में हलचल मचा दे
और उसकी लहरों और कीचड़ को
आशा से भर दे।

एक दमकता, इस्पात-जैसा ढला गीत
विचार से समृद्ध
पछतावे और पीड़ा से अम्लनये गीत
तीसरा पहर कहता है : मैं छाया के लिये प्यासा हूँ
चाँद कहता है : मुझे तारों की प्यास है।
बिल्लौर की तरह साफ झरना होंठ माँगता है
और हवा चाहती है आहें।

मैं प्यासा हूँ खुशबू और हँसी का
मैं प्यासा हूँ चन्द्रमाओं,
कुमुदिनियों
और झुर्रीदार मुहब्बतों से मुक्त
गीतों का।

कल का एक ऐसा गीत
जो भविष्य के शान्त जलों में हलचल मचा दे
और उसकी लहरों और कीचड़ को
आशा से भर दे।

एक दमकता, इस्पात-जैसा ढला गीत
विचार से समृद्ध
पछतावे और पीड़ा से अम्लीन
उड़ान भरे सपनों से बेदाग़।
एक गीत जो चीज़ों की आत्मा तक
पहुँचता हो, हवाओं की आत्मा तक
एक गीत जो अन्त में अनन्त हृदय के
आनन्द में विश्राम करता हो।